..सबसे जास्ती झूठ बोली व्यास ने ... कहें कि पहले–2 रावण ने झूठ शुरू की व्यास से। जैसे मुख्य–2 जो सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि गीता, जिस गीता के ज्ञान से बाप बैठ करके वर्सा देते हैं, वही गीता झूठी लिख करके भारत को रसातल भेज दिया। ... इससे जो फिर शास्त्र नहीं पढ़ते हैं वो उनसे कुछ अच्छे होते होंगे। देखो, कोई भी बड़ा आदमी अख़बार में किसकी निंदा करते हैं तो उनके ऊपर केस चल जाता है। बड़े–2 दण्ड पड़ते हैं उनको। जैसे एक ने अखबार में एक बड़े आदमी की थोड़ी कुछ निंदा लिखी है, तो उसने दस लाख रुपया डैनेज माँगा और तीन लाख रुपया उसको मिला। समझा ? क्योंकि जितना बहुत बड़ा आदमी, पैसे वाला, उसकी बेइज्जती और फिर...छोटे वाले, उनकी बेइज्जती, उसमें भी फर्क रहता है। वो लाखों माँगते हैं, तो वो बेचारा क्या माँगेगा! हर एक की आमदनी के ऊपर भी मदार है। .... तुम बच्चे तो सचखण्ड के स्थापन करने वाले सच्चे बाबा के बच्चे और सच्चे बाबा की ही सर्विस में अपनी शरीर की आहुती देनी पड़ती। उसके ही सर्विस में। मुख्य बात तो ये मिलता है ना। सर्विस तो दूसरी भी करनी होती है वा बच्चों को भी सम्भालना होता है। उस होते हुए भी, गृहस्थ–व्यवहार में रहते हुए भी, फिर सच्ची सर्विस करके सच्चे बाबा से इतना ऊँचा पद मिल सकता है। कथा है ना कि भील और अर्जुन को बोला बाण मारो, कोई चिड़िया की आँख में या कहाँ। ऐसे कुछ आखानी लिखा है। तो है यहाँ का दृष्टान्त। तो भील तीखा हो गया। अभी बाण मारने की बात नहीं है। ये योग की बात है। ऐसे दिखलाते हैं कि घर बैठे भी जो याद कर सकती है, जिनको लग जाती है, तो वो याद करते–2 प्राण छोड़ सकती है। तो उनको अच्छा पद मिलता है; क्योंकि याद से सज़ाओं से बचना पड़ता है। ज्ञान से सज़ाओं से नहीं बचना पड़ता है। अगर याद ठीक न करें तो फिर सज़ाएँ मिलती हैं; क्योंकि विकर्म रह जाते हैं। तो विकर्म भी नहीं करना चाहिए जितना हो सके। जो दिल को खाती हो कोई की बात वो नहीं करनी चाहिए, भले कितनी भी छोटी बात हो। तो भी जब दिल समझे कि नहीं, ये झूठी बात है या इनसे विकर्म बनेगा, ये सच्ची बात नहीं है, तो फिर ऐसी झूठी बात नहीं करना अच्छा रहता है; क्योंकि अभी तुम जैसे सच्चे की औलाद आकर के बने हो सच सीखने के लिए। एक वो है ना कि सच खाना, सच पीना, सच पहनना। अभी सच पहनना क्या? सच क्या बना ? सच सोने के वस्त्र पहनने हैं क्या? नहीं। सच पहनना सो भी ये जो बाबा का यज्ञ है, उनसे पहनना, तो उनकी पहनाइस भी सच्ची हो जायेगी। जो करे उनके लिए फायदा है। जो भी शिवबाबा के यज्ञ से लेंगे उतनी याद जास्ती रहेगी। इसलिए बाबा कहते हैं सारा मदार याद के ऊपर है। उठते,बैठते,चलते, कोई भी कार्य करते ; क्योंकि कर्मयोगी हैं, हठयोगी तो नहीं हैं, कर्म सन्यासी तो नहीं हैं। ये भी बच्चों को याद रहता होगा कि सन्यासी किसको भी यहाँ राजयोग यानी प्रवृत्तिमार्ग का ज्ञान नहीं दे सकते हैं, जो खुद छोड़ देते हैं; क्योंकि ये राजयोग। राजयोग कभी भी कोई हठयोगी नहीं सिखलाय सके। गृहस्थी सहज सिखलाये, गृहस्थ–व्यवहार में रहते हुए देखो गृहस्थी हो समझावे। अभी वो गृहस्थ में पवित्र तो ज़रूर रहता होगा; क्योंकि ब्रह्माकुमारियाँ तो प्रसिद्ध हैं। ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ– ये प्रसिद्ध हैं। ये पवित्रता को बहुत उठाती हैं। इसलिए इनका नाम अच्छा है। ये तो अच्छा है कि स्त्री और पुरुष को बहन–भाई बना देते हैं। अभी स्त्री और पुरुष अगर आ करके गोद लेते हैं, एडॉप्ट होते हैं ब्रह्मा के पास या ईश्वर के पास तो ऑटोमैटिकली जैसे बहन–भाई हो जाते हैं। वास्तव में बाबा ने समझाया था कि जबकि प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे बनते हैं तो बहुत बनते होंगे ना। तो ज़रूर ब्रह्मा के बच्चों को तो भाई–बहन ही कहेंगे। तो ऐसे नहीं हो सकता है कि प्रजापिता सिर्फ भाई–बहन यानी

कुमार और कुमारियों को गोद में लेते हैं, अधर को नहीं लेते हैं या जो विकार में रहती हैं उनको नहीं लेते हैं। ऐसे नहीं है ना। वो भी पवित्र रहती हैं जोड़ा रह करके भी; क्योंकि पवित्रता से ही पवित्र खण्ड में जाना होता है। बाकी सब नई बातें होने से उनको सहज कैसे करके समझावें? कोई ये कहे कि ...तुम ... बहन और भाई को क्यों स्त्री–पुरुष कहो ? बोलो– देखो, अगर स्त्री–पुरुष को ये निश्चय हो जावे तो(कि) बरोबर हम प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हैं और फिर हमको शिवबाबा से राजयोग का वर्सा मिलता है; क्योंकि ब्राह्मण बन पीछे देवता बनने हैं, वही है वर्सा। तो अगर वर्से के लिए हम विकार में न जायें। गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं, सिर्फ विकार में नहीं जाते हैं। क्यों ब्रह्माकुमारी–कुमार कहलाते हैं? तो फिर विकार में जायें, तो जैसे कोई भाई–बहन जाते हैं। इसलिए ये समझाया जाता है कि.. प्रजापिता ब्रह्मा जब बाप ने सृष्टि रची <u>वर्सा</u> देने के लिए, दिया भी तो ज़रूर ब्रह्माकुमार–कुमारियों को, तो ज़रूर पवित्र रहे हुए होंगे कि जबकि उनके बने; क्योंकि बाप सृष्टि रचते हैं ब्रह्मा द्वारा। तो ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची तो हो जाते हैं– ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। तो ब्रह्माकुमार और कुमारियों को भी कहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में रह करके कमल फूल के समान... तो इससे सिद्ध होता है कि ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ भी हैं तो फिर दूसरी अधरकुमार–अधरकुमारियाँ, वो भी हैं अर्थात् युगल भी हैं। तो बच्चे समझा भी सकते हैं कि बाप से वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए और मिला था और गुमाया है। भारतवासी खास; क्योंकि जयन्ती यहाँ मनायी जाती है। ये प्वाइंट तो बुद्धि में रखनी चाहिए कि जबकि शिवबाबा की जयन्ती यहाँ मनायी जाती है, तो आते ही हैं स्वर्ग का रचता और रचना ; क्योंकि हम सभी रचता को जानते हैं; पर वो कौन है, कैसा है, कब आता है, वो उनको मालूम नहीं पड़ता है। बस, क्रियेटर तो सब कोई कहते हैं, बहुत कहते हैं। सर्विस वाले हमेशा बुद्धि में ये रखते रहते हैं कि कोई आवे तो हम कैसे समझावें, किस बात पर समझावें, कितनी भी सहज करके समझावें। सहज ते सहज तो ये है ना अगर भगवान बाप है, क्रियेटर है, बाबा है तो हमको स्वर्ग में होना चाहिए; क्योंकि भारतवासी कहते हैं ना . . हम स्वर्ग में होने चाहिए वा बाप के पास होने चाहिए; परन्तु बाप के पास होने से फिर यहाँ के लिए नहीं कह सकेंगे। जबकि यहाँ हैं तभी कहा जाता है कि नर्क में हैं, तो क्यों नहीं हम स्वर्ग में हैं! वहाँ तो है ही शांति। वहाँ तो हम रहते हैं ज़रूर। जो भी आत्माएँ हैं वो बाप के पास रहती ज़रूर हैं। सभी आत्माएँ जो यहाँ देखने में आती हैं वो ज़रूर शांतिधाम में थीं। तो बाप के पास थीं। फिर बाप ने जब रचना रची तो स्वर्ग स्थापना किया है। तो नया नहीं रचा है। जभी नर्क है तब आते हैं; क्योंकि बुलाते ही तब हैं जबकि मनुष्य दुःखी होते हैं या पतित होते हैं। इसलिए बाप कहते हैं– मैं कल्प–2 कल्प के संगमयुगे आता हूँ, जबकि पाप होते हैं और हमको पुण्यआत्मा बनाने। अच्छा, सब याद भी इसी समय में करते हैं कि आ करके पावन बनाओ। अच्छा, चलो बच्ची, बताओ कौन राज्य करते थे; क्योंकि वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी फ्रॉम बिगनिंग होगी ना। तो बताओ– वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्रफी, बिगनिंग में किसका राज्य था? फिर उनके बाद किसका राज्य हुआ? ऐसे हम पूछ सकते हैं ना। जैसे हिस्ट्री–जॉग्राफी पढ़ते हैं ना.....तैसे हम कह समझा तो सकते हैं ना। अच्छा, चलो बच्ची, बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी .... सुनाते हैं, जो आते हैं उनको सुनाते हैं। पीछे कोई फिर सुनने से सिर्फ फायदा नहीं होता है। फिर तो वर्सा लेने के लिए, जो सुनाते हैं, उनको याद करना होता है, विकर्म विनाश होने...। जबकि आत्मा पवित्र न बनी है, वापस जा ही नहीं सकेगी, राज्य ले नहीं सकेगी। इसलिए पवित्रता फर्स्ट। हाँ, चलो बच्ची। ....उनसे तो स्वर्ग का 21 जन्म का वर्सा मिलता है। तो देखें कि वो हाँ करते हैं। अगर हाँ करे तो उनको बोलो– ये तो तुमको पुरुषार्थ

करना चाहिए तभी, 21 वर्सा पाने के लिए। जबकि वर्सा देने का आया हुआ है भारत में। उनको वर्सा देने के लिए भारत में आना है ना। पतित को पावन बनाए तो पावन दुनियाँ का वर्सा भी तो इनको देना है और पावन दुनियाँ के पहले घर जाने के लिए भी तो वर्सा उनको ये देते हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति तो वही देते हैं। सर्व का सदगति दाता तो वही है, बाकी तो सब झूठ बोलते हैं। गॉड फादर इज़ ट्रुथ– ऐसे कहा जाता है। अच्छा, चलो बच्ची! (म्युज़िक बजा) मीठे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट।

हैलो! सभी शिवबाबा के रूहानी ज्ञान के सेन्टर्स के रहवासी ब्राह्मण कुलभूषण स्वदर्शन चक्रधारी मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मधुबन से मात–पिता, बापदादा का यादप्यार स्वीकारम्। अच्छा! यूँ तो यादप्यार तो मुरलियों में भी मिलता है और टेप जो मँगाते हैं उनमें भी मिलता है। आज तो खास गुरूवार है, तो सभी सेन्टर्स को याद करते हैं। यूँ जब मुरली चलाते हैं तभी भी सभी सेन्टर्स को याद करते हैं कि सभी बच्चे सुन रहे हैं। ऐसे कहते हैं। फिर ये तो जानते हैं कि कोई आज सुनेंगे, कोई कल सुनेंगे, कोई–2 परसों सुनेंगे, कोई कागज़ पर सुनेंगे, कोई टेप में सुनेंगे। अच्छा, ये बात सुनी आज ? आज बाबा ने, ये बाबा ने, वो बाबा ने नहीं, ये बाबा ने। मैं उनके नाम पर नहीं कहता हूँ। तो आज बच्चों को कहा है कि यहाँ भील लोग रोटला खाते हैं, उसको वो लोग बाटी कहते हैं और देखा गया है रूखी भी खाते हैं और लाल मिर्ची की चटनी होती है उनसे भी खाते हैं और देखने में आता है, बड़े तंदरूस्त और मजबूत भी रहते हैं। तो आज बाबा ने सद्गुरूवार के दिन प्रोग्राम दिया है कि दिन में बाटी बनाओ। ये ढोढे के मिसल होते हैं। शायद कोई नई–2 आयी हुई हो, नहीं जानती हो तो उनको बताते हैं। जैसे ढोढा थप करके दांगी पर बनाते हैं ऐसे ही ये उनकी रोटला बनते हैं। रूखा भी खाते हैं। आटा भी उनको मिलता है गेहूँ का। कभी फिर लाल मिले, कभी विलायती मिले, कभी पंजाबी मिले। कोई ऐसे ही खाते हैं। कोई उसमें फिर चने का आटा डालते हैं, मिलाते हैं, फिर उनका रोटला बनते हैं, उनको बाटी बनाते हैं। तो अभी वो खाते हैं, लाल मिर्ची और कुछ मसाला डालते हैं या रूखी भी खाते हैं। बाबा ने यहाँ फिर कहा है कि आज दिन में रोटला बनाओ कनक का, भले उनमें चने का भी डालो तो भले डालो और मूली की भाजी बनाओ। तुम बच्चों को याद होगा कि एक दफा आगे बाबा ने 15 रोज़ या 20 रोज़ या कितना है, बाजरे का ढोढा और झांड खिलाई थी। पीछे शायद रात–दिन था कि सिर्फ एक वेला था? तीन दिन के लिए शायद एक वेला है कि बाजरे का ढोढा और झांड खिलाई थी 15 रोज़। अभी बाबा 15 रोज़ नहीं, बाबा खाली आज दिन में गुरूवार के दिन मूडी की भाजी और बाटी ढोढा, रोटला जिसको कहते हैं, वो बनाने का आज कहा है और छूट छोड़ा है कि अगर कोई नहीं खा सकते हैं तो भले नहीं खा सके। अरे, बाबा तो ज़रूर खायेंगे एक वेला। (किसी ने कुछ कहा) सबको मालूम है कि मूली नहीं खाते हैं; परन्तु कई बच्चे कहते हैं मूली फायदे वाली है...मूली का दान किया जाता है, फलाना किया जाता है। मेरे से बहुत पूछते थे कि डॉक्टर कहते हैं– मूली खाओ, कोई कहते हैं मूली का बीज खाओ। मैं बोला, ऐसी कोई बात नहीं है, जो चाहिए सो खाओ। ये तो डुकड़ आयेगा, मनुष्यों को तो पत्ते भी खाना पड़ेगा। ये मूली.. भी नहीं मिलेंगे। इसलिए तुम भी प्रैक्टिस कर लो भले। तो आज प्रैक्टिस करते हैं वा फ्री भी छोड़ते हैं। जिसको चाहे वो अपने लिए कुछ भी बनावे; परन्तु जनरल आज ...ढोढा और वो खिला रहे हैं। अच्छा, अभी तुम तो समझ जायेंगे। तुमको तो ख्याल करने से कि अच्छा, यहाँ मूली खा रही है, हम तो ढोढला खा रहे हैं। ऐसे भी कोई होवे तो भी कोई हर्जा नहीं है। जैसे

देखो, ज्ञान में कहते हैं ना कि हम चतुर्भुज हैं, हम चतुर्भुज हैं या कहते हैं हम में हैं, में हैं, भैंस हैं, भैंस हैं। फिर भैंस–2 करके भैंस बन जाते हैं। तैसे तुम भी बैठकर ऐसे ही मंसा कहना हम ढोढा खा रहे हैं, हम उसके साथ मूली की भाजी खा रहे हैं। फिर कोई प्रैक्टिकल में, कोई मंसा, जैसे जिसको चाहिए। बाबा का ऑर्डर तो यहाँ बनाने का है। अच्छा, सुना सब? अच्छा, विदाई।

स्वर्गवासी थे, फिर रावण ने नर्कवासी बनाया है, फिर हम भारतवासियों को फिर बाबा स्वर्गवासी बनाते हैं। अभी स्वर्गवासी बनने के लिए दैवी गुण धारण करने हैं। तो जरूर दैवी गुण धारण करना है तो पवित्र भी तो ज़रूर बनना है। झगड़े सभी होते हैं पवित्रता के ऊपर। गायन भी है द्रौपदी पुकारे– मेरी लाज रखो, मुझे नगन करते हैं। तो वही समय है कि बांधेली यही पुकार रही है– बाबा, हमारी लाज रखो। ये दुःशासन हमारा चीर उतारते हैं, मारते हैं, पीटते हैं...। देखो, वही समय तो है ना। इस समय तो कभी होता ही नहीं है। आगे हुआ था, अब हुआ है, जो अबलाओं के ऊपर अत्याचार हो रहे हैं और पुकारती रहती हैं– बाबा, हमारी लाज रखवाओ, इनकी बुद्धि का ताला खोलो। मुआ मुझे नगन करते हैं...। ..... बाबा, ऐसी कोई युक्ति रचो मुआ मरे तो हम छूट जावें। बाप बोलता है– ...मैं ..आऊँ पतित को पावन बनाने। बाकी ऐसी बात नहीं..... और हम हराते कैसे हैं, यही चक्कर सारा तो बुद्धि में रहता है ना। बाबा कैसे बादशाही दे रहे हैं, मालिक कैसे बना रहे हैं, कैसे लायक बना रहे हैं, फिर माया आ करके ये रावण रूपी पाँच .. कैसे नालायक बना देते हैं। तो देखो, हम सो लायक, हम सो नालायक। हम फिर सो लायक बादशाही के, हम सो फिर नालायक गधाई के। बादशाही के पीछे होती है गधाई। हार–जीत– ये तो कायदा है ही। जो बादशाह बनेगा वो तो राज्य करेगा, जो हरायेगा तो राज्य थोड़े ही करेगा। सेकेण्ड–2 की नूँध है। अभी हम किसको (कहें), जाओ जाकर बाबा से ये बात पूछकर आओ। ये तो है ड्रामा में तभी तो हम कहते हैं ना। देखो, ड्रामा हमको कैसा काम कराती रहती है। कोई को समझाने में मज़ा क्यों नहीं आयेगा! भई दान करने में मज़ा है ना। ये भी तो हम अविनाशी रतन दान करते हैं किसको। अरे, अंधों की लाठी बनते हैं। अगर नहीं बनावें तो हम खुद भी अंधे ठहरे। रास्ता नहीं बताते हैं, हम तो बरोबर अंधे ही ठहरे, हम क्या किसका कल्याण कर सकेंगे! आना चाहिए, दिल को खाना चाहिए। तो पुरुषार्थ करना चाहिए। एक्सपेंसिव चीज़ें खरीद करते हैं सुख के लिए। तो बाबा इनको युक्ति से डायरेक्शन्स भी देते रहते हैं– इनको तो ज़रूर भेजो, इनको तो ज़रूर भेजो...। शायद ले गया होगा ज़रूर...।

सभी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ब्राह्मण कुलभूषण सर्विसेबुल सभी बच्चों प्रति मात–पिता बापदादा का आज गुरूवार के दिन यादप्यार और गुडमॉर्निंग।